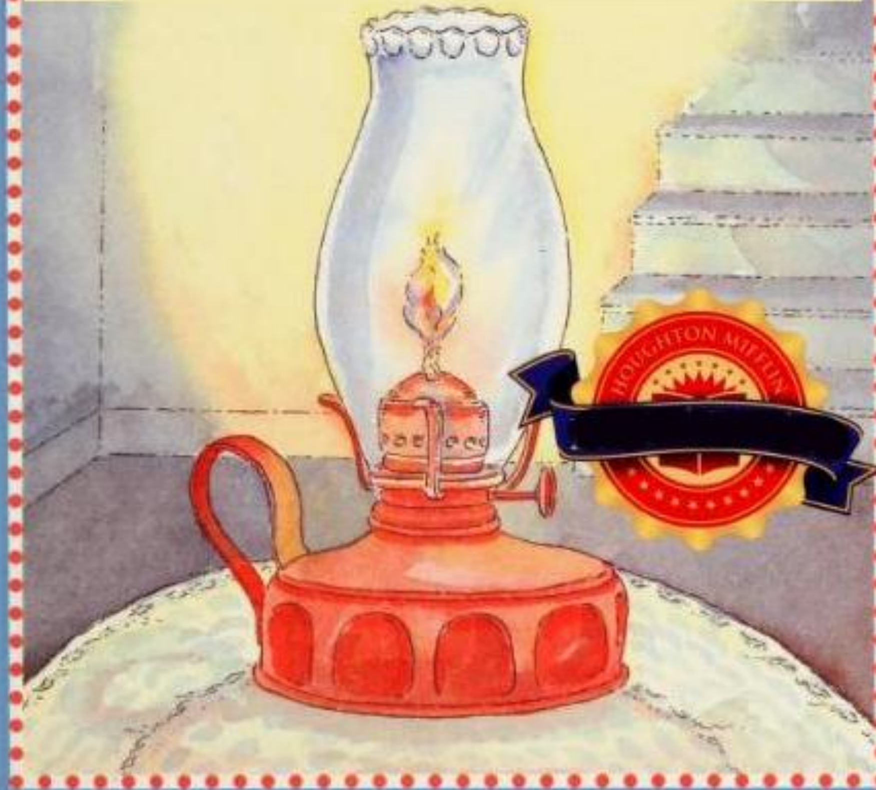
गैम्पी के लैंप



गैम्पी के लैंप



वसंत ऋतु के पहले दिन सस्ता बाज़ार खुल गया. गैम्पी और मैं एक दूकान से दूसरी दूकान घूमते रहे. मैंने पहले ही एक खिलौना ले लिया था. गैम्पी अभी भी कुछ ढूँढ़ रहे थे. मैं जानती थी की वह क्या खोज रहे थे.

गैम्पी की आँखें चमकने लगीं. “मुझे लगता है कि मेरी बहुमूल्य वस्तु मुझे मिल गई है, ब्रेंडा,” उन्होंने फुसफुसा कर मेरे कान में कहा. उन्होंने शीशे के पात्र की ओर संकेत किया. उसका हैंडल कान के आकार का था. मैंने उसे उठाया और शीशे को ऊँगली से छुआ. “क्या यह केरोसिन लैंप है?” मैंने पूछा.

“हाँ, बेशक,” गैम्पी बोले.



जब हम घर पहंचे तो माँ नाराज़ हो गई. “बस और कबाड़ नहीं!” उसने कहा.

“इस बार मुझे बहुमूल्य वस्तु मिली है!” गैम्पी ने लैंप दिखाते हुए उत्साह से कहा. “इसके लिए मैंने सिर्फ चार डॉलर दिए!”

मज़ाक में माँ जानबूझ कर गुस्से से बोली, “क्या ऐसा लैंप पहले ही आपके पास नहीं है?”

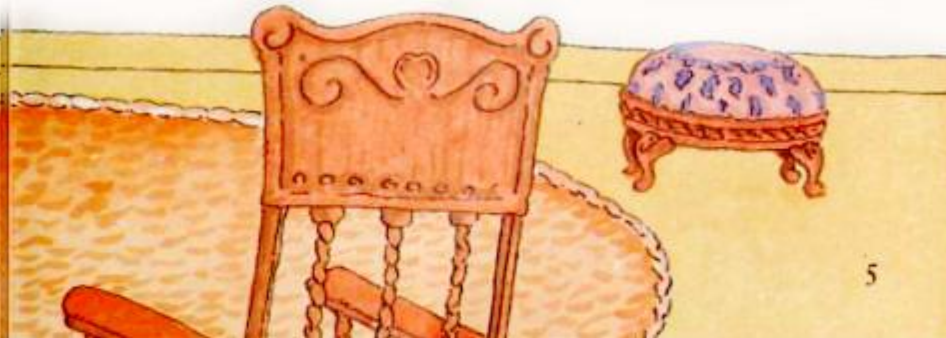
“बिलकुल इस तरह का नहीं है,” गैम्पी ने कहा. फिर वह हँस दिए. “कम से कम मुझे तो लगता है कि दोनों लैंप एक जैसे नहीं हैं,” वह बोले.



गैम्पी मेरी माँ के दादा थे और मेरे परदादा थे. गैम्पी पुराने लैंप इकट्ठे करते थे. वह उन्हें सस्ता बाज़ार में और कबाड़ बाज़ार में और पुराना सामान बेचने वाली दुकानों में खोज निकालते थे.

मेरी माँ को लगता था कि सब पुराने लैंप बेकार थे. न उन में बिजली के तारें थीं, न बल्ब लगाने के लिए कोई होल्डर था. अधिकतर लैंप तब के बने थे जब घरों में बिजली न हुआ करती थी. उन दिनों न बिजली के बल्ब होते थे और न बैटरी से चलने वाली टार्च होती थी. इन लैंपों में आमतौर पर केरोसिन तेल का प्रयोग किया जाता था. प्रकाश करने के लिए लैंप का बर्नर जलाया जाता था. तेल जलने से प्रकाश पैदा होता था.

इन लैंपों के विषय में मैंने गैम्पी से ही सारी जानकारी पाई थी. अपने काम से रिटायर होने के बाद से ही वह पुराने लैंप इकट्ठे करने लगे थे. माँ ने बताया था कि कुछ वर्षों बाद हमारा छोटा सा घर पुराने लैंपों से भर गया था. गैम्पी के लैंपों का संग्रह हटाना होगा, ऐसा माँ को लगने लगा था. इस कारण गैम्पी ने सारे लैंप घर की बेसमेंट में बने एक कमरे में ले जाकर रख दिए थे.



गैम्पी के साथ मैं भी लिफ्ट से बेसमेंट में आ गई. उन्होंने कमरे का ताला खोला और लाइट का स्विच दबाया. कमरा प्रकाशित हो गया. हम उस छोटे कमरे के अंदर आ गये.

दीवारों के साथ लगे शेल्फ लैंपों और लैंपों के पुर्जों से भरे हुए थे. शीशे की साफ़ चिमनियाँ एक कतार में रखीं थीं. कुछ लैंप छोटे और गोल आकार के थे. कुछ ऊँचे और आकर्षक थे. अधिकतर के शीशे बिलकुल साफ़ थे. कुछ डिब्बा-नुमा थे. कई लैंपों पर सजावट हो रखी थी. उन लैंपों के कलपुर्ज़े ज़मीन पर पड़े संदूकों में रखे थे जिनसे गैम्पी अपने लैंपों की मरम्मत कर सकते थे.





यह लैंप उन लोगों के थे जो वर्षों पहले इस संसार में रहते थे. मुझे उनके विषय में सोचना अच्छा लगता था. मैंने उस लड़की की कल्पना की जो मेरी आयु की थी और जिसका जन्म मेरे जन्म लेने से सौ वर्ष पहले हुआ था. हर रात वह लड़की एक छोटा लैंप हाथ में पकड़े अपने बेडरूम की ओर जाती थी. उसके मंद प्रकाश में वह अपना रास्ता देखती थी. लैंप को वह एक मेज़ पर रख देती थी. जब वह अपने बिस्तर में लेटती थी तो लैंप जलता रहता था. तेल जल्दी ही खत्म हो जाता था और लैंप बुझ जाता था.

गैम्पी ने अपना नया बहुमूल्य लैंप उस लैंप के निकट रख दिया जो उसके जैसा दिखता था. फिर वह मुस्कराते हुए, उन दोनों लैंपों को देखते रहे.

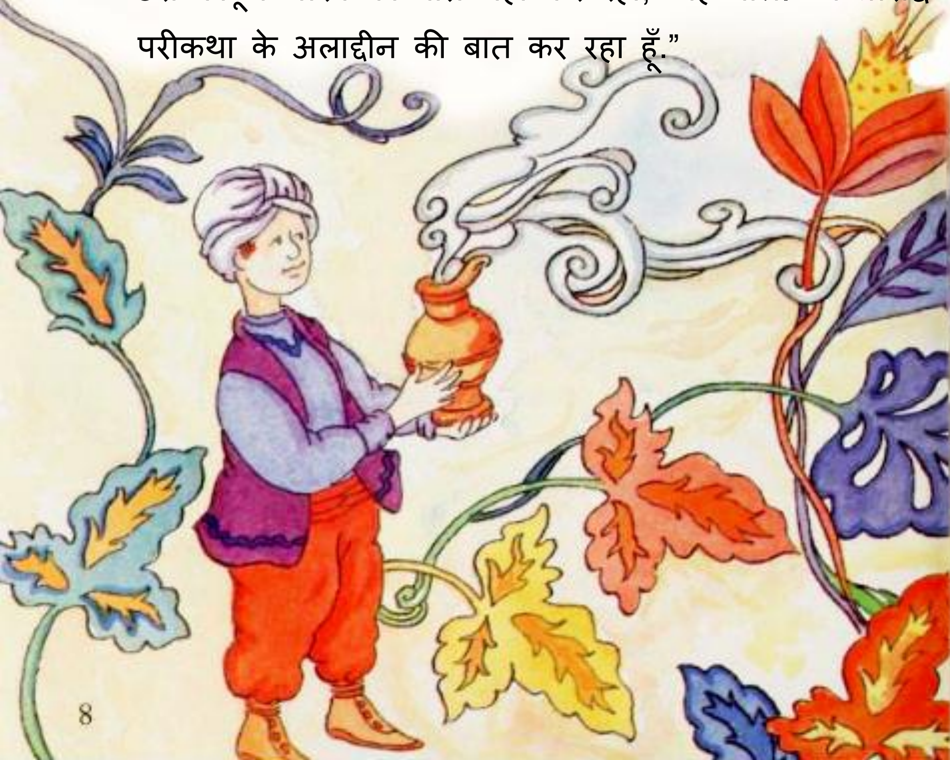


"आज हम किस लैंप के विषय में बात करें?" गैम्पी ने मुझ से पूछा. मैंने उस लैंप की ओर हाथ बढ़ाया जिसमें एक हैंडल लगा था और जिसका आकार गोल था.

"यह लैंप तो शायद उस लड़के का था जिसका नाम अलाद्दीन था," गैम्पी ने कहा. "तुम जानती हो न कि अलाद्दीन कौन था, नहीं जानती क्या?" उन्होंने मुझसे पूछा.

"मैंने फिल्म देखी थी," मैंने उत्तर दिया.

"फिल्म?" गैम्पी ने अपने भौंहें ऊपर उठा कर कहा. "मैं उस कार्टून चरित्र की बात नहीं कर रहा," वह बोले. "मैं प्रसिद्ध परीकथा के अलाद्दीन की बात कर रहा हूँ."



गैम्पी ने उस गरीब लड़के के बारे में बताया जिसका नाम अलाद्दीन था और जिसे एक गुप्त जादुई बगीचे में एक चिराग मिला था. संयोग से उसे पता लगा कि चिराग को रगड़ने से एक जिन्न प्रकट हो जाता था. जिन्न उसकी हर इच्छा पूरी कर सकता था. उस जादुई चिराग के जिन्न की सहायता से अलाद्दीन बहुत धनी बन गया. हीरे-जवाहरात से सज़ा हुआ उसने एक महल बनवाया और राजा की सुंदर बेटी से विवाह भी किया.



जब गैम्पी ने कहानी समाप्त की तो मैंने उस लैंप को ज़ोर से रगड़ा और अपनी इच्छा बताने का नाटक किया. गैम्पी हंस पड़े. फिर उन्होंने एक लैंप को शेल्फ से उठाया और उसके पीतल के पुर्जे पर लिखे शब्द की ओर संकेत किया. “इस बर्नर पर तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है?” गैम्पी ने पूछा.

मैंने ध्यान से देखा. “अलाद्दीन!” मैंने पढ़ कर बताया.

“हाँ, सच में. अब सोचने की बात है कि कोई कंपनी ऐसा नाम क्यों चुनेगी?” गैम्पी ने आँख झपकते हुए पूछा.

गैम्पी कभी-कभी अलाद्दीन जैसी कहानियाँ सुनाते थे और कभी-कभी सच्ची कहानियाँ सुनते थे.



“मैं तो गाँव में पला बढ़ा हूँ.” गैम्पी ने कहा. “बिजली को आये तीस वर्ष से अधिक हो चुके थे. लेकिन तब भी सड़कों पर बिजली के खंबे नहीं लगे थे. वैसे भी अधिकतर लोगों के लिए बिजली बहुत महंगी थी. हम लकड़ी के चूल्हे पर खाना पकाते थे. चूल्हे और अँगीठी से हम घरों को गर्म रखते थे. और कमरों में प्रकाश करने के लिए हम तेल के लैंप जलाते थे.” हाथ में पकड़े हुए लैंप को गैम्पी एकटक देख रहे थे, “इस प्रकार के लैंप.”

उस रात बिस्तर में लेटे-लेटे मैं कल्पना करने लगी कि गैम्पी मेरी आयु के थे और अपने लैंप के प्रकाश में पढ़ रहे थे.

अगली सुबह मैं नींद से उठी तो अजीब महसूस कर रही थी. घड़ी में चार बज कर दस मिनट हुए थे. लेकिन कमरे में सूर्य का प्रकाश चमक रहा था. मैंने सुबह की सामान्य आवाज़ें सुनने का प्रयास किया. मुझे टीवी की आवाज़ सुनाई न दी. मुझे माइक्रोवेव ओवन की बीप की आवाज़ सुनाई न दी. रेफ्रीजरेटर की गुंजन सुनाई न दी. बाहर गाड़ियाँ नहीं चल रहीं थीं. सिर्फ एक खामोशी थी.

मैं झटपट खिड़की के पास आई और बाहर की दृश्य देख कर चौंक गई. सारी गली और फुटपाथ पूरी तरह बर्फ से ढके हुए थे. छतों के किनारों से बर्फ के आइसिकल लटक रहे थे. घरों के निकट खड़ी कारें चमकते हुई बर्फ के विशाल टुकड़ों जैसी लग रही थीं. चिकने रास्ते पर कोई कार न चल रही थी. हर वस्तु प्रकाश में चमक रही थी.



“कल रात की वर्षा बर्फ़बारी में बदल गई थी,” माँ ने बताया. “बर्फ के तूफ़ान ने बिजली की तारों उखाड़ दीं, इसलिए घर में बिजली नहीं है.” वह अपने हेडसेट पर रेडियो की रिपोर्ट सुन रही थी. “आज स्कूल भी बंद हैं,” उसने कहा. “लोगों को गाड़ियाँ चलाने का प्रयास नहीं करना चाहिए. सारे नगर में बिजली बंद है.”

सुबह का समय हम ने घर के भीतर रह कर बिताया. मुझे अहसास हुआ कि बिजली से कितनी चीज़ें चलती थीं क्योंकि कुछ भी नहीं चल रहा था. गैम्पी और माँ कॉफ़ी नहीं पी पाए, क्योंकि कॉफ़ी बनाने वाली मशीन नहीं चल रही थी. चूल्हा काम नहीं कर रहा था. हम माइक्रोवेव ओवन, टोस्टर और डिशवाशर का उपयोग नहीं कर पा रहे थे. माँ को चिंता थी कि रेफ्रीजरेटर में रखा खाना खराब हो जाएगा. मैं कंप्यूटर पर गेम्स नहीं खेल सकती थी. मैं टीवी नहीं देख सकती थी. गर्म पानी नहीं था और घर भी ठंडा था.

मैंने एक किताब पढ़ी. फिर माँ और मैंने मिल कर जिगसा पज़ल सुलझाया. मैंने मित्रों से फोन पर बात की. फिर मैं खिड़की से बाहर देखने लगी और बर्फ के आइसिकल से टपकती पानी की बूंदों को देखती रही.

दुपहर तक सूर्य की गर्मी ने अधिकतर बर्फ को पिघला दिया था. “ब्रेंडा, चलो बाहर जाकर ताज़ा हवा का आनंद लेते हैं.” माँ ने सुझाव दिया और हम दोनों बाहर आ गये.

बाहर आकर देखा कि सब के मन में यही विचार आया था. पड़ोसी टहल रहे थे और बातें कर रहे थे और एक-दूसरे से पहली बार मिल रहे थे. लोगों ने घर से बाहर कुर्सियां लगा ली थीं और उन पर बैठ कर शतरंज और अन्य गेम्स खेल रहे थे. कुछ लोगों ने मांस भूनने के लिए अंगीठियाँ लगा ली थीं और भुना हुआ खाना एक-दूजे को दे रहे थे. सारा पड़ोस बहुत ही मित्रवत और प्रसन्न लग रहा था.

सूर्य अस्त हो गया. आकाश पहले धुंधला हुआ, फिर काला हो गया. सड़क पर उतना ही अँधेरा हो गया जितना अलमारी के अंदर होता है. गैम्पी कई लैंप लेकर बाहर आ गये. उन्होंने उन लैम्पों में केरोसीन डाला और फिर उन्हें घर के प्रवेश द्वार के पास रख दिया. उन्होंने वह लैंप जला दिए. सब लैंप प्रकाश से चमकने लगे.

“क्या हमें उधार देने के लिए आपके पास ऐसे लैंप और हैं?” उस आदमी ने पूछा जो सड़क के दूसरी तरफ रहता है.

“हाँ, अवश्य हैं,” गैम्पी ने कहा. वह एक जलता हुआ लैंप भीतर ले गये ताकि वह स्टोर रूम का रास्ता देख पायें. जब वह वापस आये तो लैम्पों से भरा एक सन्दूक साथ ले आये. कई पड़ोसी उन से लैंप ले गये.



दो दिन और बिजली न आई. जब बिजली आई तो मुझे बहुत ख़ुशी हुई. लेकिन मुझे इस बात की भी ख़ुशी थी कि मुझे ऐसा सुंदर अनुभव हुआ था जो सदा याद रहेगा. मैं कभी न भूल पाऊँगी कि रात में गैम्पी के लैंप किस तरह चमक कर मंद, सुनहरा प्रकाश हर ओर फैला रहे थे.



समाप्त